बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)

Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 152 /2026) **Year: 8th**

जिला: बाँदा | **जारी करने की तिथि: 18.04.2026**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ अधिक तापमान के मद्दे नजर चौलाईए भिंडीए लोबियाए कुल्फाए बैगनए टमाटरए मिर्च तथा कद्दू वर्गीय फसलों में आवश्यक मृदा नमी बनाए रखें। इसके लिए काली पॉलीथिन अथवा सुखी घास की पलवार प्रयोग कर सकते हैं। ➢ आवश्यक मृदा नमी के अभाव एवं अधिक तापमान के कारण मिर्चए बैगनए टमाटर तथा कद्दू वर्गीय सब्जियों में पुष्प व फल.पतन हो सकता है। ➢ फसलों को थ्रिप्स तथा सफेद मक्खी जैसे चूसक कीड़ों के प्रकोप से सुरक्षित रखने के लिए उपयुक्त कीटनाशी का प्रयोग करें । ➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए चुने गए खेत की गहरी जुताई कर दें जिससे कीट व्याधि व खर पतवार के बीज नष्ट हो जाएं।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** आज के हालात में खेती तो वैज्ञानिक ढंग से ही करें वरना लाभ की जगह नुकसान मिल सकता है। वैज्ञानिक ढंग आपके सदियों से चले आ रहे तरीकों का सुधरा व लाभदायक रूप है जिससे उतनी ही भूमि में कम समय, मेहनत व लागत से ज्यादा उपज मिलती है। ➢ इस समय कुछ कमजोर खेतों में हरी खाद बनाने के लिए ढैचा, लोबिया या मूग लगा दें तथा धान रोपने से १–२ दिन पहले मिट्टी में जुताई करके मिला दें इससे मिट्टी की सेहत सुधरती है। ➢ ग्रीष्मकालीन फसलों में सिंचाई का समुचित प्रवंधन करें । . ➢ रबी की तैयार फसलों की समय से कटाई – मंड़ाई सुनिश्चित करें तथा सुरक्षित स्थान पर भण्डारण करें । ➢ फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल को लगातार न उगाएं। **मृदा.प्रबंधन** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवश्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवश्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें।

		➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ मिट्टी परीक्षण हेतु मृदा नमूना एकत्र कर नजदीकी प्रयोगशाला में परीक्षण हेतु भेजें। ➢ ग्रीष्म कालीन मूंग की बुवाई में 20:60:20 कि0ग्रा0 प्रति हे0 की दर से नत्रजनः फास्फोरसः पोटाश का प्रयोग करें। इस हेतु 50 कि0ग्रा0 क।च एवं 13 कि0ग्रा0 डव्च प्रति एकड बुवाई के समय आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ गर्मियों में शरीर की उष्मा को निकालने व अपने शारीरिक तापमान को स्थिर रखने के लिए पशु शरीर से पानी का पसीने के रूप में वाष्पीकरण करते हैं। पानी को शरीर से वाष्पित होने के लिए पशुओं को शरीर से उष्मा लेनी पड़ती है, जिससे पशुओं के शरीर का तापमान कम हो जाता है। ➢ गर्मियों के मौसम में पशुओं के दुग्ध उत्पादन में गिरावट आ जाती है, जिसका मुख्य कारण चरी की उपलब्धता व गुणवत्ता में कमी व पशुओं का गर्मियों में कम चारा खाना है। इसके अतिरिक्त पशु अपनी शारीरिक ऊर्जाको दूध उत्पादन की अपेक्षा अपने शारीरिक तापमान को सामान्य बनाए रखने के लिए उपयोग में लाने को प्राथमिकता देती है। जिससे पशुओं की दुग्ध उत्पादन हेतु पर्याप्त ऊर्जा उपलब्ध नहीं हो पाती व उनके उत्पादन में कमी आ जाती है। ➢ पशुओं के लिए साफ–सुथरी व हवादार आवास की व्यवस्था होनी चाहिए। पशुगृह का फर्श पक्का व फिसलन रहित होना चाहिए तथा मूत्र व पानी के निकास हेतु उपयुक्तव्यवस्था होनी चाहिए। ➢ पशुगृह की छत उष्मा की कुचालक हो, ताकि गर्मियों में अत्यधिक गरम न हो। अगर पशुगृह की छत पक्की या एस्वेस्टस सीट की बनी हो तो उस पर अधिक गर्मी के दिनों में 4 से 6 इंच मोटी घास–फूस की परत डाल देनी चाहिए। ये परत उष्मा अवरोधक का कार्य करती है, जिसके कारण पशुशाला के अंदर का तापमान कम बना रहता है। ➢ सूर्य की रोशनी को परावर्तन करने हेतु पशुगृह की छत पर सफेद रंग करना या चमकीली एल्मोनियम शीट लगाना भी लाभप्रद पाया गया है। ➢ पशुगृह छत की ऊंचाई कम से कम 10 फूट होनी आवश्यक है, ताकि हवा का समुचित संचार पशुगृह में हो सके तथा छत की तपन से पशुओं को बचाया जा सके।

		➢ पशुगृह की खिड़किया व दरवाज़ों व अन्य खुली जगहों पर जहा से तेज गरम हवा आती हो, बोरी या टाट आदि टांग कर पानी का छिड़काव कर देना चाहिए। ➢ गर्मियों में ज्यादातर दुधारू पशु सायंकाल 6 बजे से प्रातः 7 बजे की अवधि में मद में आते हैं। खासकर भैंसें रात्रि के 12 बजे से सुबह 5 बजे के मध्य मदावस्था के लक्षण दिखाती है। अकसर पशुपालक इस मदकाल को नहीं पहचान पाते और पशु गर्भित होने से रह जाते हैं। ➢ पशु गर्मियों में चारा चरना कम कर देते है अतः पशुओं को चारा प्रातः या सांयकाल में ही उपलब्ध कराना चाहिए। जहा तक संभव हो दुधारू पशुओं के आहार में हरे चारे की मात्रा अधिक रखें। यदि पशुओं को चारागाह में ले जाते हैं तो प्रातः व सांयकाल को ही चराना चाहिए।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए अथवा क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 ग 5 ग 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0 तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहे व आवश्यकता पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें। ➢ आम में भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2

		मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5-	**पादप रोग प्रबंधन**	बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों के लिए अप्रैल (दूसरा पखवाड़ा) का पौध रोग प्रबंधन परामर्श वर्तमान समय में रबी फसलें जैसे गेहूं, चना, सरसों कटाई के बाद भंडारण की स्थिति में हैं, जबकि गर्मी की फसलें जैसे मूंग, तरबूज, खरबूजा, सब्जियाँ (भिंडी, टमाटर, लौकी, करेला आदि) खेतों में लगी हुई हैं। भिंडी, लौकी, कद्दूवर्गीय सब्जियाँः सावधानीः इस मौसम में नमी व तापमान की स्थिति के कारण फफूंद जनित रोग जैसे पाउडरी मिल्ड्यू (सफेद धब्बे), डाउनी मिल्ड्यू व झुलसा रोग होने की संभावना रहती है। **उपायः** • रोग दिखने पर सल्फर 80 प्रतिषत डब्ल्यू.पी./2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। • पत्तियों पर धब्बे या झुलसा दिखाई दे तो मैन्कोजेब 75 प्रतिषत डब्ल्यू.पी की 2.5 ग्राम/लीटर या क्लोरोथालोनिल का छिड़काव करें। टमाटर, मिर्च व बैंगनः सावधानीःटमाटर व मिर्च में झुलसा, उकठा व फल सड़न रोग होने की संभावना। उपायः • रोग प्रारंभ होते ही कॉपर ऑक्सीक्लोराइड/3 ग्राम/लीटर या मेटालेक्सिल–मैन्कोजेबमिश्रण/2.5 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें। • उकठा प्रभावित पौधों को निकालकर नष्ट करें और आसपास के पौधों की जड़ में ट्राइकोडर्मा आधारित जैव फफूंदनाशी का प्रयोग करें। मूंग (ग्रीष्म कालीन दलहन): सावधानीःलीफ स्पॉट, पाउडरी मिल्ड्यू, येलो मोजैक वायरस रोग दिखाई दे सकते हैं। उपायः • पाउडरी मिल्ड्यू की स्थिति में सल्फर 80 प्रतिषत डब्ल्यू.पी./2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी घोल बनाकर छिड़काव करें। • येलो मोजैक के वाहक सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए नीम आधारित कीटनाशी या इमिडाक्लोप्रीड 17.8 एसएल (0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें • रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर खेत से बाहर नष्ट करें। भंडारित अनाज का रोग प्रबंधनः सावधानीःकटाई के बाद गेहूं, चना, सरसों आदि की फसल को भंडारण हेतु सुरक्षित करना आवश्यक है। उपायः • अनाज को अच्छी तरह सुखाकर ही भंडारण करें। • भंडारण स्थान को पहले साफ करें और मेलाथियॉन 50 ई.सी. का छिड़काव करें (1 लीटर/100 लीटर पानी प्रति 100 वर्गमीटर)। • भंडारण के समय नीम की सूखी पत्तियाँ या नीम खली का प्रयोग करें।

6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**नींबूः** ➢ नींबू में एक वर्ष के पौधे के लिए दो किग्रा. कम्पोस्ट और 70 ग्राम यूरिया प्रति पौधा दें। अप्रैल में नीबू का सिल्ला, लीफ माइनर और सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ तने व फलों का गलना रोग के लिए बोडों मिश्रण का छिड़काव करें। ➢ जस्ते की कमी के लिए तीन किग्रा जिंक सल्फेट को 1.7 किग्रा. बुझा हुआ चून के साथ 500 लीटर में घोलकर छिड़कें। ➢ नींबू प्रजातियो में फल बनने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए तथा नये पौधों में देषी फुटान अवष्य हटायें । **बेरः** ➢ छोटे व नये पौधों की सिंचाई करावें पैबन्धी चष्मा हेतु देषी बेर के पौधों की कटाई–छटाई करावें। देषी फुटान हटावें। बागों में सिंचाई रोक देवें। **आमः** ➢ फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पेड़ पर छिडकाव करें। ➢ प्रथम पखवाड़े में सिंचाई अवश्य दे। छोटे पौधों के बीच की भूमि की जुताई करें फलों को गिरने से रोकने के लिए मध्य अप्रैल में 2,4–डी, 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ आम के गुम्मा रोग (मालफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को काट कर जला या गहरे गढ्ढे में दबा दें. आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए एल्फा नेफ्थलीन एसिटिक एसिड 4.5 एस.एल. के 20 मिली को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. ➢ मीलीबग नई कोपलों, फूलों व फलों का रस चूसकर काफी नुकसान करती है। नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा नीचे गिरी या पेड़ों पर चढ़ रह कीड़ों को इकट्ठा करके जला दें और घास साफ रखें। **अमरूदः** ➢ अप्रैल में सिंचाई न करें, फूलों को तोड़ दें ताकि फल मक्खी फूलों में अण्डे न दें पाये, जिससे फल सड़ जाते हैं। अमरूद की सिर्फ शरदकालीन फसल ही लेनी चाहिए। **पपीताः** ➢ अप्रैल मे पपीते की नर्सरी लगाने के लिए 70 वर्ग मीटर में 170 बीज को 6×6 इंच की दूरी और एक इंच गहरा लगाएं। उन्नत किस्मों में सनराइज, हनीड्यु, पूसा डिलीशियस, पूसा ड्वार्फ व पूसा जांयट हैं। एक नर्सरी में एक कुंतल खाद मिलाकर बेड तैयार करें और बीज को एक ग्राम कैपटोन से उपचारित करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु कमषः छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ किसानों को कृषि वानिकी के तहत वृक्षारोपण की योजना तैयार करने जैसे उद्देश्य के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन, स्थान, रोपण दूरी, गड्ढे तैयार करना इत्यादि। ➢ किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पौधारोपणध्वृक्षारोपण से पूर्व 30ग30ग30 बउ आकार के गड्ढे तैयार कर लें।

		➢ चारे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, किसान खेत की सीमा के किनारे वृक्षारोपण की योजना बना सकते हैं। ➢ किसान भाई जो चिरौंजीध्चार (बुचनेनिया लैनजन) पौधशाला में रुचि रखते हैं, तो यह इसके संग्रह का सबसे अच्छा समय है क्योंकि वनक्षेत्र में चिरौंजी परिपक्व हो रही हैं। अतः चिरौंजी/चार के संग्रह हेतु उचित योजना एवं व्यवस्था बनायें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7.डॉ दिनेश गुप्ता 8.डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11.डॉ धर्मेन्द्र कुमार